ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

ज्योतिष विज्ञान या
अंधविश्वास...

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:

978-81-19927-99-9

Price: ₹530.00

The aim of this book is not to criticize, insult, oppress and dominate any present/modern knowledge or studies or culture or believes. Any such issue arises is entirely a misunderstanding of one, who claiming so and either writer, writer or/and Publisher does not hold any responsibility and is not responsible for any such issues arises. The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher Readers are requested to use their intelligence and knowledge while reading and understanding contents of this book. writer or/and Educreation does not hold any responsibility and is not responsible for any social, political, cultural, economic, commercial, national, international, educational or other problems or/and conflicts raised because of reading this book, using , implementing facts, formulas and other things given in this book, in any way or whatsoever.

Printed in India

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

विश्व की प्रथम पुस्तक जिसमें ज्योतिष व विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन व सार का विवेचन

लेखक

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

ज्योतिष के जिज्ञासुओं को ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वृद्धि के लिये अद्वितीय पुस्तक

समस्त विश्व में वर्तमान समय में यह अजीब विडम्बना है कि, ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान विषय को मानने वाले करते हैं एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते हैं लेकिन दोनों वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष कर, दूसरी विधा को निम्न व अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है लेकिन मेरे विचार से यह कार्य न ही उचित है एवं न ही समस्या का समाधान है।

लेकिन 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास' एक ऐंसी पुस्तक जिसमें प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों का वर्णन, ज्योतिष की उपयोगिता, ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान में अंधविश्वास क्यों व कैसे प्रवेश कर गया एवं ज्योतिष को आधुनिक विज्ञान के समान कैसे प्रयोग किया जाये, जैसे विभिन्न कारणों व समाधान बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया, दूसरी तरफ ज्योतिष विज्ञान के वैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डालने का अद्वितीय प्रयास किया गया है, इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वर्द्धन के लिये वरदान साबित होगी।

लेखक का परिचय

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

बी. एस सी.(बायो) एम.ए. (अग्रेंजी साहित्य) ज्योतिष मर्मज्ञ उपाधि एवं गोल्ड मेडेलिस्ट

एक्युप्रेशर, सुजोक, चाइनीज व जर्मन एक्युप्रेशर उपचार विशेषज्ञ एवं रैकी मास्टर

वर्तमान पता – विवेकानन्द नगर एम.आई – जी 4 सेंट्रल स्कूल के पीछे दमोह (म.प्र.)

मो. 09300694736, 8109442751

ई.मेल – astro.rppatel@gmail.com

वेबसाईट – www.bhoojyotish.com
www.bhoodharam.com

जीवन परिचय

रज्जन प्रसाद पटैल का जन्म का जन्म 15 सितंबर 1973 में म.प्र. दमोह जिले के कनारी गॉव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव से हुई एवं उच्च शिक्षा बी.एस.सी.(बायो), एम.ए.(अग्रेंजी साहित्य) दमोह से प्राप्त कर, जिज्ञासु व समाज सेवा प्रवृत्ति के कारण 1997 में जबलपुर से एक्युप्रेशर व चुंबकीय उपचार प्रशिक्षण प्राप्त कर, दमोह में एक्युप्रेशर व चुम्बकीय उपचार पद्धति से उपचार सेवा प्रारंभ की। इसी बीच 1 दिसंबर 1998 कलकत्ता में अंतर्राष्ट्रीय वैकल्पिक उपचार महासम्मेलन में गोल्ड मेडल से सम्मानित हुये। वैकल्पिक उपचार की जापानी ध्यान पद्धति रैकी में मास्टरशिप कोर्स किया।

उपचार के साथ–साथ स्वरुचि व विभिन्न जिज्ञासाओं के समाधान के उद्देश्य से ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ किया। सत्‌त गहन अध्ययन एव क्रमशः बहुत सी जन्मकुण्डलियों पर प्रायोगिक परीक्षण करते हुये ज्योतिष शास्त्र में पारंगता हासिल की,

इसी क्रम में ज्योतिष पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख भेजना प्रारंभ किया।

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली ने ज्योतिष मर्मज्ञं उपाधि चार विषयों पर प्रदान की, सर्वप्रथम मई 2006 में सर्वश्रेष्ठ लेख 1–जन्म कुण्डली में संतान योग बाधा व उपाय, एवं क्रमशः 2–जन्म कुण्डली में कैंसर योग, 3–जन्मकुण्डली में मांगलिक दोष परीक्षण मांगलिक का मांगलिक या अमांगलिक से विवाह मिलान, 4–जन्मकुण्डली में विवाह व प्रेम विवाह योग, विवाह मे देरी, तलाक व दाम्पत्य जीवन सुधारने के उपाय।

आचार्य पटैल ने अन्य ज्योतिष विषयों पर जैसे, 1.–जन्मकुण्डली में बहुसंबंध व बहु विवाह योग। 2– जन्मकुण्डली में व्यापार या नौकरी योग एवं विषय चयन, 3–जन्मकुण्डली में संतान योग व आधुनिक मेडीकल विज्ञान का आनुवॉशिकी सिद्धान्त जैसे विषयों पर राष्ट्रीय ज्योतिष महासम्मेलनों में शोध पत्र वाचन कर चुके एवं शोध पत्र, ज्योतिष रिसर्च जनरल दिल्ली पत्रिका में छप चुके। माह सितंबर 2009 में अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली से मान्यता व संबंद्धता प्राप्त कर दमोह शहर में स्वयं की संस्था' सिद्धी विनायक ज्योतिष प्रशिक्षण, परामर्श व रिसर्च केंद्र प्रारंभ किया एवं लगातार ज्योतिष ज्ञान का प्रचार–प्रसार व लोगों की समस्या निदान व समाधान कार्य संचालन कर रहे हैं। लेखक के द्वारा अभी तक चार हिन्दी पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका है। 1–भू–ज्योतिष, 2–भू–ज्योतिष भाग एक, 3–ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास, 4– भू–धर्म एवं विश्व बंधुत्व का उदय।

विषय सूचि

क्र.	विषय	पृष्ठ
	लेखक का परिचय	v
	सत्यम शिवम् सुंदरम	x
	ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय की आवश्यकता क्यों?	xiv
1.	प्राचीन ज्योतिष क्या है?	1
2.	पंचाँग	2
3.	जन्मकुण्डली या जन्मपत्री क्या है?	15
4.	आकाशीय नक्षत्र मंडल, राशि मंडल व नवग्रह पथ	17
5.	जन्मकुण्डली में लग्न व भाव	18
6.	बारह राशियाँ व उनसे संबंधित गुणधर्म	22
7.	प्राचीन ज्योतिष के सूत्र	29
8.	नवग्रहों से संबंधित गुणधर्म	34
9.	लग्नकुण्डली व द्वादश भाव विचार	64
10.	भावेशों का बारह भावों में विभिन्न मतान्तर के अनुसार फल	67
11.	जन्मकुण्डली या जन्मपत्री के बारह भावों के अनुसार फल	91
12.	संतान जन्म पर ज्योतिष और आधुनिक विज्ञान के आधार पर विचार	101
13.	ज्योतिष और रोगों पर प्राचीन सिद्धांत व मेरा व्यक्तिगत अध्ययन	115
14.	बारह राशियाँ, भाव व नवग्रहों का नौकरी या व्यवसाय से संबंध	134
15.	प्राचीन ज्योतिष में वर्णित विभिन्न प्रकार के योग	142
16.	फलादेश संबंधी विशेष नियम	155
17.	द्वादश लग्नों में कैंसे करें वास्तविक फलादेश?	156

18.	विशेष फल	392
19.	ज्योतिष फलादेश संबन्धी नियम	393
20.	विंशौत्तरी दशाफल	395
21.	ग्रहों के अशुभ फल	406
22.	ज्योतिष एवं नवग्रह उपाय	411
23.	रत्नों के प्रकार	412
24.	नवग्रह एवं रुद्राक्ष	417
25.	नवग्रहों से संबंधित दान	425
26.	रंगो से करें नवग्रह संतुलन	427
27.	सूर्य किरण उपचार विधि से नवग्रह संतुलन	428
28.	ग्रहों से संबंधित ध्यान	429
29.	लाल किताब व नवग्रह उपाय	431
30.	जन्मकुण्डली का अध्ययन कैसे करें?	434
31.	वास्तुशास्त्र का परिचय	439
32.	वास्तु सम्मत मकान में उपयुक्त स्थानों का सारांश	442
33.	जैसा खाया अन्न वैसा हो मन्न	445
34.	ज्योतिष व कर्म सिद्धान्त	447
35.	विज्ञान	450
36.	जीव विज्ञान का कार्य क्षेत्र व उद्देश्य	458
37.	विज्ञान की शुरुआत	459
38.	अन्धविश्वास क्या है?	464
39.	ज्योतिष एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव देता है?	466
40.	ज्योतिष में उत्प्रेरक व एन्जाइम सिद्धान्त	467
41.	ज्योतिष व आकर्षण का सिद्धान्त	472
42.	क्या ज्योतिष व विज्ञान एक दूसरे के विरोधी हैं?	473
43.	वर्तमान ज्योतिष में अन्धविश्वास	474
44.	क्या विज्ञान में अंधविश्वास नहीं है?	477
45.	विज्ञान को स्वीकारोत्ती कैसे मिली?	483
46.	मानसिक समस्या व ज्योतिष	484
47.	ज्योतिष व विज्ञान में व्यौहारिक विभिन्नतायें	486

48.	क्या ज्योतिष को विज्ञान की कसौटी की आवश्यकता है?	488
49.	ज्योतिष के संबंध में वर्तमान समय में मजेदार तथ्य	491
50.	ज्योतिष की वैज्ञानिकता पर विचार	493
51.	वर्तमान समय विज्ञान का समय	496
52.	जीवन की उत्पत्ति संबंधी प्रसिद्ध वैज्ञानिक ओपेरिन का सिद्धान्त	500
53.	आधुनिक विज्ञान के आधार पर ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र मॉडल्स	504
54.	भू–ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र मॉडल का चित्र	507
55.	दस ग्रह मंत्र	513
56.	दस ग्रह स्त्रोत	514
57.	विश्व शाँति प्रार्थना	515

सत्यम शिवम सुन्दरम

सूर्यःपितामहो व्यासो वशिष्ठोअत्रिः पराशराः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुअंगिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनिकोअष्टादशाश्चैते ज्योतिशास्त्रःप्रवर्त्तकाः।।

सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पाराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलिस, च्यवन, यवन, भृगु एवं शौनक ये अठारह ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक बतलाये गये हैं। ऋषि पाराशर जी ने उक्त अठारह आचार्यों के अतिरिक्त पुलस्त्य नाम के आचार्य को प्राचीन ज्योतिष आचार्यो में सम्मिलित किया है।

मैं अल्प बुद्धि मानव उन सभी उन्नीस प्राचीन आचार्यों को प्रणाम करता हूँ। मैं प्रणाम करता हूँ, उन सभी आचार्यो व विद्वानों को जिनका नाम ज्योतिष के इतिहास में वर्णित नहीं है व मैं प्रणाम करता हूँ उन आचार्यों व ज्योतिष विद्वानों को जो इस पवित्र कार्य के द्वारा मानव सेवा कार्य में संलग्न है। यह अजीब विडम्बना है कि ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान विषय को मानने वाले करते एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते हैं, लेकिन दोनों वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष कर, अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है लेकिन मेरे विचार से यह कार्य न ही उचित व न ही समस्या का समाधान है। प्रकृति द्वारा निर्मित संयोग कि, मैंने बी.एस.सी. (बायोलाजी) एवं ए म.ए, (अंग्रेजी साहित्य) का अध्ययन किया व करीब चार वर्षों तक बायोलॉजी व विज्ञान विषय का प्रायवेट विद्यालयों में अध्ययापन कार्य किया। 1998 में जीवन में अजीब मोड़ आया कि वैकल्पिक उपचार पद्धति एकयुप्रेसर का प्रशिक्षण प्राप्त कर उपचार कार्य प्रारंभ कर दिया। एकयुप्रेसर उपचार के साथ–साथ रैकी मास्टरशिप का कोर्स किया एवं चायनीज एंक्युपंचर में टाईम एकयुपंचर विषय का अध्ययन करते ही मेरे मन में भारतीय ज्योतिष विधा जानने की इच्छा जाग्रत

हुई एवं स्वयं ने निरन्तर अध्ययन, प्रयोग से पाया कि ज्योतिष एक कारगर विधा है जो कि मानव के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ के साथ–साथ मानव के जीवन से जुड़ी अन्य समस्याओं का निदान व समाधान ज्योतिष शास्त्र में उपलब्ध है। लेकिन मेरे साथ मुख्य समस्या थी, जो मैंने पूर्व में कही, जिस पर में निरंतर विचार करता रहता था कि 'ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान वाले करते एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते लेकिन दोनो वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष करते एवं अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है'। मैंने अभी तक बहुत से शोध लेख लिखे व मेरा प्रयास रहा कि उक्त लेख सत्य, सारगर्वित व उचित हों, जो कि तथ्यों व विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित हो एवं कपोल कल्पित बातों या कहानियों पर आधारित न हों, विभिन्न ज्योतिष पत्रिकाओं में भेजने का प्रयास किया, जैसे सर्वप्रथम मई 2006 में सर्वश्रेष्ठ लेख 1–जन्म कुण्डली में संतान योग, बाधा व उपाय एवं आधुनिक आनुवाँशकी विज्ञान एवं क्रमशः 2–जन्म कुण्डली में कैंसर योग, 3–जन्मकुण्डली में मांगलिक दोष परीक्षण, मांगलिक का मांगलिक या अमांगलिक से विवाह मिलान, 4–जन्मकुण्डली में विवाह व प्रेम विवाह योग, विवाह में देरी, तलाक व दाम्पत्य जीवन सुधारने के उपाय, उक्त लेखन पर दिल्ली की प्रसिद्ध मैग्जीन के द्वारा सर्वश्रेष्ठ लेखन के लिये चार बार ज्योतिष मर्मज्ञ की उपाधि से सम्मान पत्र प्राप्त हुआ एवं अन्य ज्योतिष विषयों पर जैसे, 1.– जन्मकुण्डली में बहुसंबंध व बहु विवाह योग, जब इस विषय पर मैंने लेखन कार्य किया, संयोग से उसी समय प्रसिद्ध मैग्नीज इंडिया टुडे–ए सी नेल्सन–ओ.आर. जी मार्ग का सेक्स सर्वेक्षण जिसमें गुप्त रुप से बहुसंबंध के विषय में एक सर्वे अलग–अलग पुरुषों व महिलाओं पर किया गया था। जिसमें प्राप्त परिणाम के आकड़े दिये थे, मैंने इंडिया टुडे के आंकड़ो एवं ज्योतिष में प्राप्त योगों से तुलना कर ही लेख लिखा था, लेकिन पत्रिका में मात्र वह लेख ही छापा गया जो मात्र ज्योतिष से संबंधित था, पूरा लेख नहीं प्रकाशित किया, जिससे मुझे काफी कष्ट हुआ, ऐसा काफी बार हुआ, ये तो हमारे देश की प्रवृत्ति है, जिसमें मीठी व कपोल

कल्पित बाते हों, हकीकत से पर हों, जिनमें थोड़ी सी संस्कृत हो। लेकिन वैज्ञानिक तथ्य न हो, ऐसे वक्तव्य या लेखों को अधिक महत्व दिया जाता है व ऐसे ही लेख छापे जाते है। इसी क्रम में: 2–जन्मकुण्डली में व्यापार या नौकरी योग एवं विषय चयन, 3–जन्मकुण्डली में संतान योग व आधुनिक मेडीकल विज्ञान का अनुवाँशिकी सिद्धान्त आदि विषयों पर शोध पत्र वाचन ज्योतिष महासम्मेलनों में किया एवं उक्त लेख दिल्ली की तिमाही रिसर्च मैग्जीन में भी प्रकाशित हुये। अभी कुछ ही समय पूर्व मैंने एक नये सिद्धान्त भू–ज्योतिष पर लेखन कार्य किया जिसका कापीराईट भी हो चुका है व मेरी 'भू–ज्योतिष पुस्तक' प्रकाशित भी हो चुकी है। भू–ज्योतिष सिद्धान्त में यह रहस्य उजागर करने का प्रयास किया गया कि ज्योतिष में सत्ताईस नक्षत्र, बारह राशियों एवं नव ग्रहों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर (विशेषकर मानव पर) क्रमशः अध्ययन किया जाता। लेकिन कभी–कभी दूर दृष्टि पात करते–करते हुये मनुष्य निकट को भूल जाता है। जिसे दिया तले अंधेरा कहते हैं, क्योंकि प्राचीन ज्योतिषीयों से लेकर आधुनिक कम्प्यूटर ज्योतिष के समय में सभी ने नक्षत्र मंडल, राशि मंडल नवग्रहों से निकलने वाली अदृश्य किरणों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर शुभ या अशुभ प्रभाव के बारे में निरंतर अध्ययन किया गया एवं अध्यन जारी है। लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि पृथ्वी भी एक ग्रह है, जिस ग्रह पर मनुष्य व सभी जीवों का जीवन मरण चक्र पूरा होता है। अतः पृथ्वी ग्रह का सभी जीवों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य होना चाहिये। क्योंकि जब कई प्रकाश वर्ष दूर स्थित नक्षत्रों एवं राशियों एवं लाखों, करोड़ों कि.मी. दूर से नवग्रहों का शुभ या अशुभ प्रभाव पृथ्वी पर स्थित जीवों पर हो सकता या होता है, तब पृथ्वी ग्रह का प्रभाव, पृथ्वी वासियों पर क्यों नहीं होगा। अतः पृथ्वी ग्रह का प्रभाव पृथ्वी पर जन्म लेने वाले, जीवन यापन करने वाले समस्त जीवों पर पृथ्वी ग्रह का प्रभाव सबसे अधिक होता ही है। इस प्रकार भू–ज्योतिष का उद्देश्य पृथ्वी व पृथ्वी वासियों पर पृथ्वी के सापेक्ष, नवग्रहों, बारह राशियों व सत्ताईस नक्षत्रों का शुभ या अशुभ प्रभाव का सुक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करना एवं फलित ज्योतिष में महत्व प्रदान

करने उद्देश्य से लिखी गई। मेरा चिन्तन लगातार इस विषय पर था कि कैसे ज्योतिष और विज्ञान में एक प्यार भरा अटूट संबंध स्थापित किया जाये एवं यह संबंध मात्र ज्योतिष और विज्ञान का ही नही, बल्कि उन विपरीत धाराओं का संबंध होगा जो काफी समय से प्रवाहित हो रही थी। लेकिन मेरा विश्वास है कि प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान के मिश्रण से एक ऐसा महाविज्ञान तैयार होगा जोकि समस्त विश्व के लिये बहुत प्रकार से हितकारी होगा। इस प्रकार जो विचार प्रभु की कृपा व माँ पृथ्वी की असीम दया व कृपा से मेरे मस्तिष्क में कुछ वर्ष पूर्व आया था, आज मैं उस विचार व सिद्धान्त का लेखन प्रारभं कर रहा हूँ। यह अभी लेखन कार्य का प्रारंभिक रुप है, मेरी प्रभु व माँ पृथ्वी से प्रार्थना हैं, मेरे ऊपर कृपा दृष्टि बनायें रखे ताकि मेरी लेखिनी अनवरत चलती रहे। क्योंकि हे! परंब्रम्ह परमात्मा आपके द्वारा रचित समस्त प्रकृति व आपके द्वारा संचालित ब्रम्हाण्डीय प्रक्रिया के गूढ़ रहस्य आप ही जानते है, मैं तो मात्र आपकी प्रक्रिया का कण मात्र भाग हूँ। इसलिये 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय' लेखन का उद्देश्य प्राचीन व आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों का खडंन या आलोचना कर, स्वयं की अहं संतुष्टी करना, किसी भी प्रकार का कोई उद्देश्य नहीं है। 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास' विषय लेखन का उद्देश्य ज्योतिष विज्ञान को तर्क संगत, वैज्ञानिक नया एवं मजबूत आधार प्रदान करना है। प्राचीन व आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों में अति अंधविश्वास, रुढ़िवाद, अवैज्ञानिक सिद्धान्तों के कारण पवित्र व उपयोगी ज्ञान गर्त में जा रहा है। उस पतन को रोककर, प्राचीन एवं आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों व नियमों में सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन, आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों की मदद लेते हुये, अनुसंधान के द्वारा, नये, सही, उचित व वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं नियमों को जोड़कर, उचित ज्ञान तैयार करना, जो सत्यम, शिवम, सुंदरम सिद्धान्त पर आधारित हों एवं समस्त मानव समाज के साथ–साथ सभी जीवों व वनस्पतियों लिये उपयोगी सिद्ध हो।

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय की आवश्यकता क्यों?

मानव स्वभाव प्रारंभ से सदैव जिज्ञासु रहा है, इसी जिज्ञासा के फलस्वरूप प्राचीन मानव ने सर्वप्रथम पंच तत्व क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर अर्थात पृथ्वी, पानी, अग्नि, आकाश व वायु के प्रभाव को मानव व मानवीय जीवन शैली पर जानने का प्रयास किया। तत्पश्चात ज्वार–भाटा, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण जैसी घटनाओं के कारणों को जानने का प्रयास किया। प्रातः सूर्य उदय, शाम को सूर्य अस्त दूसरे दिन पुनः सूर्य दर्शन एवं शाम को सूर्य अस्त के बाद चन्द्र उदय, कुछ दिनों चन्द्र के दर्शन होना कुछ दिनों के पश्चात चन्द्र का आकाश में अदृश्य होना, आकाश में टिमटिमाते विभिन्न प्रकार के तारे, कुछ स्वतंत्र तारे, कुछ समूह में तारे, बहुत से तारा समूहों का विशेष अंतराल के बाद अदृश्य होना व पुन; दिखाई देना, ये कुछ ऐसे बहुत से अनसुलझे प्रश्न थे, जिनका प्राचीन बुद्धि जीवियों ने बिना किसी दूरबीन की मदद के उत्तर जानने का प्रयास किया, इसी क्रम में क्रमशः सत्ताईस, नक्षत्र, अश्वनी, भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाड़ा, उत्तराषाड़ा, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वाभाद्रापद, उत्तराभाद्रापद, रेवती की खोज कर, ज्योतिष विषय का प्रारंभ हुआ। ऐसा माना जाता है कि, पूर्व में सात दिन की जगह नक्षत्रों के नाम पर सत्ताईस दिन होते थे, जैसे प्रथम अश्वनी दिन, द्वितीय भरणी दिन तृतीय कृतिका दिन इस प्रकार क्रमशः बाकी सत्ताईस दिनों के नाम थे। सत्ताईस नक्षत्रों की खोज के बाद क्रमशः भचक्र की बारह राशियाँ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ व मीन या राशि मंडल एवं सात ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरू, शुक्र, शनि आदि ग्रहों की अदृश्य किरणों का प्रभाव मानव जीवन पर अध्ययन किया। यहाँ तक कि पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण में

सूर्य व चन्द्र की कक्षा के कटान बिन्दु राहू, केतु जैसे छाया ग्रहों को भी ज्योतिष विषय में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार ज्योतिष में सत्ताईस नक्षत्र, बारह राशियों एवं नव ग्रहों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर (विशेषकर मानव पर) क्रमशः अध्ययन से ज्योतिष शास्त्र की खोज हुई।

वर्तमान समय विज्ञान का समय है एवं सक्षेंप में कहा जाये कि आधुनिक मानव जीवन, विज्ञान के बिना अधूरा है, तो अतिसयोक्ति नहीं होगी। लेखक की बचपन से विज्ञान, धर्म व दर्शन में अत्यधिक रुचि रही है एवं शैक्षणिक विषय बी.एस.सी (बायोलाजी) एवं वैकल्पिक उपचार पद्धतियों के द्वारा मानव सेवा मेंरठ के रहने के कारण, काफी वर्षों के ज्योतिष विषय का अध्ययन, हजारों जन्मकुण्डलियों का प्रायोगिक परीक्षण के बाद यह पाया कि–

1. वर्तमान समय में ज्योतिषी व ज्योतिष के मानने वाले ज्योतिष को सर्वज्ञ ही नहीं मानते, बल्कि ज्योतिष विषय का भी अतिसयोंक्ति पूर्ण प्रचार प्रसार जारी है।
2. वर्तमान समय में जगह–जगह ज्योतिष के सलाह कार, प्रशिक्षण केन्द्रों की भरमार, मैग्नीज, पैपर में राशिफल, निःशुल्क व शशुल्क जन्मकुण्डली सलाह प्रचार–प्रसार जारी है।
3. ज्योतिष विधा से संबंधित कार्य प्राचीन समय से वर्तमान समय तक सम्मान जनक कार्य माना जाता है। ज्योतिष कार्य एक पवित्र श्रेणी व समाज सुधार का कार्य है, जिसके कारण समाज में ज्योतिषी को काफी सम्मान मिलता है, लेकिन वर्तमान समय में अधिकांश ज्योतिषी समाज से सम्मान व अपने कार्य का परीश्रमिक तो प्राप्त करते हैं, लेकिन बदले में समाज को उचित मार्गदर्शन की बजाय अंधविश्वास परोसने का कार्य कर रहें हैं, जिससे ज्योतिष जैसी पवित्र व उपयोगी विधा गर्त में जा रही है।
4. ज्योतिष वह विषय है, जिसमें व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक जीवन के सभी पहलू जैसे जातक या जातिका का व्यक्तित्व,

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

एक ऐसी पुस्तक जिसमें प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों का वर्णन, ज्योतिष की उपयोगिता, ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान में अंधविश्वास क्यों व कैसे प्रवेश कर गया एवं ज्योतिष को आधुनिक विज्ञान के समान कैसे प्रयोग किया जाये, जैसे विभिन्न कारणों व समाधान बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरी तरफ पुस्तक में ज्योतिष विज्ञान के वैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डालने का अद्वितीय प्रयास किया गया है, इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वर्द्धन के लिये वरदान साबित होगी।

लेखक से सम्पर्क हेतु:

Email: *astro.rppatel@gmail.com*
www.bhoojyotish.com | www.bhoodharam.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart Google Play amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-99-9
9 788119 927999